IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M06/1/A1HIN/SP1/HIN/TZ0/XX

HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 22 May 2006 (morning)
Lundi 22 mai 2006 (matin)
Lunes 22 de mayo de 2006 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

१. (क)

एकाएक माँ के आपरेशन के लिए तीन लाख जुटाने के प्रश्न ने सबको स्तम्भित कर दिया। थोड़ी देर तक खामोशी छाई रही। फिर छोटे बेटे ने कहा, पिताजी इतने कम समय में इतना रूपया हो पाना मुश्किल है। मैंने बैंक से लौन भी ले रखा है। इससे भी साफ और सरल ढंग से समझाया मुझे बड़े
५. बेटे ने, फिलहाल इस बड़े आपरेशन को रहने देते हैं। मैं डाक्टर से स्वयं बात कर लेता हूँ कि वह गोलियों से इस रोग को दूर करने की कोशिश करें। फिर मान लीजिए माँ इस आपरेशन से ठीक हो भी गई तो बाकी जिन्दगी कितना रिस –रिस कर जिएंगी। मैं सब बातें सुनकर सन्न रह गया। यदि मैं दिल का मरीज होता तो हार्ट फेल तो हो ही चुका। मुझे लगा कि
१०. मैं अपने ही बेटों से उनकी माँ के जीवन की भीख माँग रहा हूँ और वह मुझे दुत्कार रहे हैं। परन्तु जिस बात का डर था वही हुआ। वह बच न सकी। मेरे होश उड़ गए। सारी स्थिति धीरे –धीरे समझ में आने लगी। बेटे उस दिन माँ के ठीक होने का नहीं, मरने का इंतजार कर रहे थे। घर में हिस्सा चाहते थे जो ले गए। आपरेशन थियेटर में जाते समय बहुएँ
१५. कैसे बिलख –बिलख कर रो रही थीं। पाँव छूने के ये बहाने भीतर गई तो तन के सारे गहने ही शायद वही उतरवा लाई हों। उसके पार्थिव शरीर को जब लेकर लौटा तो गहने न देखकर बेटों से पूछा भी था। दोनों ने अनभिज्ञता जतलाई थी। हैरानगी थी कि उन्होंने जाकर अस्पताल में कभी कुछ नहीं पूछा। कहा था 'अब कहाँ मिलेंगे।'
२०. कुछ दिनों तक चिर –परिचितों का आना जाना लगा रहा। धीरे –धीरे वह भी समाप्त हो गया। दोनों बेटे भी अपनी मजबूरियाँ जतलाकर मुझे अकेला छोड़कर चले गए। और यह बेटी, जिसे मैंने ठीक से पढ़ाया तक नहीं, वह इतना कुछ कर रही है। वह भी निःस्वार्थ। पराई अमानत समझकर कभी ठीक से व्यवहार नहीं किया, अलग –अलग व्यवहार रखा उसके और बेटों के साथ ।
२५. क्यों बेटों की कामना की थी मैंने। कमला और दामाद जी मेरी ओर हसरत भरी निगाहों से देखते रहे। अतीत की कड़वी यादों को भूलने के लिए मैंने मौन स्वीकृति दे दी। अब मैंने मकान अपनी बेटी के नाम कर दिया है। अपनी बेटी के साथ रहता हूँ, परन्तु पता नहीं क्यों मैं अपने आप को बहुत कर्जदार पाता हूँ। मैं नहीं जानता यह पाप है या पुण्य, गलत है या ठीक। यदि किसी
३०. धर्म पुस्तक में लिखा है कि लड़की के घर का खाना खाना पाप है तब मैं पापी हूँ। शायद इस अपराध बोध से कभी छुटकारा न पा सकूँ।

'पुत्री का कर्ज ' पंकज पवन जाह्नवी जनवरी 2003

-लेखक ने उपर्युक्त गद्य के माध्यम से किस महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है?

-लेखक अपनी बात कहने में कहाँ तक सफल हुआ है?लेखक द्वारा प्रयोग किए गए साधनों के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

-माता –पिता का बेटियों की तुलना में बेटों के प्रति अगाध स्नेह कहाँ तक उचित है ? लेखक द्वारा वर्णित विषय वस्तु ने आपको कहाँ तक प्रभावित किया ?

-प्रस्तुत गद्यांश की भाषा-शैली के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

१. (ख)

२१वीं सदी का झरोखा

२१वीं सदी के बच्चे
अक्ल में न होंगे कच्चे
बड़ों को देंगा दिखला कर
देते रहेंगे गच्चे।

५. २१वीं सदी की नारी
होगी मर्दों पे भारी
पहनेंगी कोटपैंट
उतर जाएगी साड़ी।
२१वीं सदी के शिष्य
१०. कक्षा में रहेंगे अदृश्य
हाथ में होगी उनके कोक
मुँह से बोलेंगे श्लोक।
२१वीं सदी के नेता
देश का करेंगा पलीता
१५. जनता को मारमार
खुद बनेंगे विजेता।
२१वीं सदी में शादी
समय की होगी बरबादी
यूँ ही मौज करो
२०. नहीं तो बढ़ेगी आबादी।
२१वीं सदी में भोजन
की जहमत न उठाइगा
२कैप्सूल सुबह शाम खाइए
--------- तंदरूस्ती पाइएगा।

कृष्ण गर्ग सरिता अगस्त द्वितीय 2001

-इस कविता में कवि ने क्या कहने का प्रयास किया है और वह अपनी बात कहने में कहाँ तक सफल रहा है ?

-इक्कीसवीं सदी में बच्चे महिलाएँ और नेताओं की क्या महत्वपूर्ण भूमिका होगी? अपने विचार प्रकट कीजिए।

-अपने दृष्टिकोण को प्रतिपादित करने में कवि को कहाँ तक सफलता मिली है

-कविता की भाषा –शैली के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।